E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
Impact Factor: RJIF 5.12
IJAAS 2020; 2(1): 270-271
Received: 16-11-2019
Accepted: 17-12-2019

डॉ० सौरभ
ग्राम+पो0– नरहा, भाया– रीजा,
जिला–सीतामढी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० सौरभ
ग्राम+पो0– नरहा, भाया– रीजा,
जिला–सीतामढी, बिहार, भारत

हिन्दी का विकास और अर्थसंसर्ग

डॉ० सौरभ

सारांशः
सम्बद्ध रूपों को आधार बनाकर संस्कृत और हिन्दी की जिन विषम चालों की बात कही गई है उनके विषय में यह ज्ञातव्य है कि प्राचीनकाल की भारतीय आर्यभाषाओं में अपनी लम्बी विकास यात्रा के कम में अनेक बार अपनी चाल बदली और उसकी चाल में आए बदलाव के कारण ही बोलचाल की वैदिक भाषा लौकिक संस्कृत बनी और लोककण्ठ की संस्कृत भाषा प्राकृत अपभ्रंशो के रूप में अस्तित्त्व में आई अपभ्रंशों तथा आधुनिक आर्यभाषाओं के संक्रमणकाल में आकर फिर उसकी गति बदली जिसे जनपदीय आधार पर विभिन्न आधुनिक आयभाषाएँ अपनी–अपनी जनपदीय विशेषताओं के साथ प्रचलन में आई। हिन्दी सहित विभिन्न आधुनिक आर्यभाषाओं की संस्कृत–मूलकता का इससे बढकर और दूसरा क्या प्रमाण हो सकता है कि ध्वनि भाव प्रकृतियों तथा अन्य भाषायी तत्वों के परिवर्तन की अनेक दशाओं के बावजूद ये भाषाएँ अपने विभिन्न तत्त्वों के व्यवहार में मुख्यतः संस्कृत की दिशा का ही अनुसरण कर रही है।

प्रस्तावनाः
अधिकांश विद्वानों ने हिन्दी को शौरसनी अपभ्रंश के कोरवीभेद से विकसीत बताया है। हिन्दी शब्द की अर्थवत्ता के संबंध में विद्धनों में मतभिन्नता है। इनमें एक वर्ग हिन्दी वादियों का है तो दूसरा वर्ग अहिन्दीवादियों का हिन्दीवादियों ने भिन्न–भिन्न प्राकृत अपभ्रंशो से निकली हुई समस्त हिन्दी प्रभाववाले जनपदों की स्थानीय बोलियों को हिन्दी के अंर्तगत समाहित कर दिया है। [1] जबकि अहिन्दीवादी विद्वान् इस वर्गीकरण को असंगत मानते है। इस सम्प्रदाय के विद्वानों ने सम्बन्धित जनपदों की भाषाओं के पुनः वर्गीकरण की आवश्यकता पर बल दिया है। इन्होंने हिन्दी शब्द की अर्थवत्ता का ऐतिहासिक विवरण देते हुए इसके आयाम को संकुचित करने की आवश्यकता बतलाई है। इन विद्वानों ने भाषा–तात्त्विक आधार पर बिहार की तीन आधुनिक आर्यभाषाओं मैथिली, मगही और भोजपुरी को हिन्दी वर्ग से बाहर की भाषाओं के रूप में रखा है। [2] आधुनिक काल के विभिन्न वर्षो में हिन्दी शब्द की अर्थवत्ता के स्वरूप का विवरण देते हुए डॉ0 भोलानाथ तिवारी ने कहा है कि प्रथम पर्व में इसे भारत के बाहर के देशों में हिन्दी भारतवर्ष के सभी भाषाओं के लिए प्रयुक्त होती थी। दूसरे पर्व में इसका प्रयोग मुसलमानों की हिन्दी के लिए होने लगा तीसरे पर्व में यह मध्य देशीय भारतीयभाषा के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। इस काल में इस शब्द में उर्दू रेखता, दक्खिनी तथा हिन्दुस्तानी आदि को भी समाहित किया था। [3] चतुर्थ पर्व में यह शब्द एक विचित्र प्रकार की अर्थवत्ता से सम्बलित किया गया। इस पर्व में जो 1850 में अस्तित्व में आया, विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न स्त्रोतों से उद्भूत आधुनिक आर्यभाषाओं को हिन्दी नाम से अभिहित करना प्रारंभ किया जो भाषा–तात्त्विकता से दूर था। सर्वप्रथम 1853 में मुबंई के मुख्य न्यायाधीश सर एरस्किन पेरी ने आधुनिक हिन्दी प्रदेश की भाषाओं में मैथली को छोड़ शेष सभी के साथ–साथ सिन्धी, पंजाबी और मुल्तानी को भी हिन्दी की बोलियों के रूप उपस्थापित किया। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि बीसबीं सदी के प्रथम चरन में अस्तित्व में आए हिन्दी आन्दोलन के प्रवर्तक समर्थक विद्वानों ने जिनमें हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों और भाषाविद् सम्मिलित है, हिन्दी शब्द को कुछ परिवर्तित रूप में उसी व्यापक अर्थ में अपनाया जिस रूप में इसका प्रयोग उपरिलिखित चतुर्थ पर्व में हुआ था। इसप्रकार हरिऔद्य, श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्रशुक्ल, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा आदि विद्वानों ने बिहार उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश के कुछ भागों की भाषाओं को हिन्दी नाम दिया। [5] शायद कुछ व्यावहारिक बाधा के कारण ही यह वर्ग सिन्धी, पंजाबी, नेपाली को हिन्दी वर्ग में समाहित नही कर सका। इस तरह इस अभिनव अर्थ में ही अधिकतर हिन्दीवादी विद्वान हिन्दी शब्द का व्यवहार भिन्न–भिन्न प्राकृत अपभ्रंशों से विकसित आधुनिक आर्यभाषाओं के लिए करते आ रहे है। इन विद्वानों के मतानुसार ब्रजभाषा राजस्थानी, अवधी, मैथिली, मगही और भौजपुरी सभी हिन्दी की आँचलिक बोलियाँ है। ग्रियर्सन शायद प्रथम भाषाविद थें जिन्होंने राजस्थानी, मैथिली–मगही और भाजपुरी को हिन्दी की बोलियों के रूप में स्वीकार नही किया। पर उन्होंने भी पूर्वी हिन्दी के नाम से अवधी को हिन्दी के अंतर्गत ही माना। [6]

डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी ने भाषा विभाजन और वर्गीकरण में भाषा–तात्त्विक आधार को प्रमुखता देकर अवधी, बघेली, छत्तीसगढी को हिन्दी की परिधी से बाहर कर दिया। किन्तु हिन्दीवादी विद्वानों ने डॉ0 चटर्जी की इस भाषा–तात्त्विक मान्यता को हिन्दी विरोध की उपज मानकर कोई महत्त्व नही दिया। इस संदर्भ में डॉ0 रामविलास शर्मा ने ऐतिहासिक भाषाविदों के लीक से हटकर आर्य–भाषा–विश्लेषण की नई पद्धति चलाने की चेष्टा की है। उन्होंने पहले 'भाषा और समाज' तथा बाद में 'राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत साहित्यिक या परिनिष्ठित हिन्दी के अव्यवहित स्त्रोत के विषय में परस्पर टकराने वाली मान्यताएँ व्यक्त करते हुए इसके उदभव और विकास की कहानी कही है। अपनी पहली कृति में उन्होंने हिन्दी को खड़ी बोली के विकास के रूप देखा है, किन्तु दूसरी कृति में इनके मतानुसार बाँगरू ने ब्रजभाषा के प्रभाव से हिन्दी रूप धारण किया। [7] हिन्दी, इसके मूल में मानी गई जनपदीय भाषा तथा इसके समानान्तर प्रचालित अन्य जनपदीय भाषाओं के प्राचीन तथा मध्यकालीन स्त्रोतों के संदीर्भ में डॉ0 शर्मा का दृष्टिकोण ऐतिहासिक यथार्थ को सही परिप्रेक्ष्य में उन्हे देखने नही देता। उनकी दृष्टि में हिन्दीसहित विभिन्न आधुनिक आर्य भाषाएँ संस्कृत–प्राकृत अपभ्रंशो से असम्बद्ध और संस्कृत के समानान्तर प्रचलित जनपदीय भाषाओं की सहज विकास–परम्परा की भाषाएँ है।

सम्बद्ध रूपों को आधार बनाकर संस्कृत और हिन्दी की जिन विषम चालों की बात कही गई है उनके विषय में यह ज्ञातव्य है कि प्राचीनकाल की भारतीय आर्यभाषाओं में अपनी लम्बी विकास यात्रा के क्रम में अनेक बार अपनी चाल बदली और उसकी चाल में आए बदलाव के कारण ही बोलचाल की वैदिक भाषा लौकिक संस्कृत बनी और लोककण्ठ की संस्कृत भाषा प्राकृत अपभ्रंशो के रूप में अस्तित्त्व में आई अपभ्रंशों तथा आधुनिक आर्यभाषाओं के संक्रमणकाल में आकर फिर उसकी गति बदली जिसे जनपदीय आधार पर विभिन्न आधुनिक आयभाषाएँ अपनी–अपनी जनपदीय विशेषताओं के साथ प्रचलन में आई। इसप्रकार सभी कालों के रूपों से यही तथ्य स्पष्ट होता है कि आर्यभाषा की यह चाल उसकी आंतरिक प्रकृति–भावप्रकृति से सम्बन्द्ध न रहकर उसके बाहरी रूप में हुए बदलाव के रूप ही अभिज्ञेय है। पर विकास की स्थिति में इस भिन्नता के बावजूद यह तथ्य अनुपेक्षणीय है कि जिस प्रकार प्राग्वैदिक आर्यभाषातत्त्वों के विकास के रूप में वैदिक भाषा और फिर लौकिक संस्कृत अस्तित्व में आई उसी प्रकार मुख्यतः संस्कृत तत्त्व प्राकृत अपभ्रंशो के मार्ग से विकसित होकर आधुनिक हिन्दी, अवधी आदी आधुनिक आर्यभाषाओं के तत्त्वों के रूप में अंतरित हुए है। इस स्थिति की यथार्थता प्रमाणित करने के लिए उपेक्षित आधार सामग्री डॉ0 शर्मा की ही भाषा–विश्लेषण पद्धति में मिल जाती है। हिन्दी सहित विभिन्न आधुनिक आर्यभाषाओं की संस्कृत–मूलकता का इससे बढकर और दूसरा क्या प्रमाण हो सकता है कि ध्वनि भाव प्रकृतियों तथा अन्य भाषायी तत्वों के परिवर्तन की अनेक दशाओं के बावजूद ये भाषाएँ अपने विभिन्न तत्त्वों के व्यवहार में मुख्यतः संस्कृत की दिशा का ही अनुसरण कर रही है।

निष्कर्षः

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी की विकास–यात्रा उसके अपभ्रंश तथा प्राकृत से उद्भूत होने से लेकर विभिन्न देशज बोलियों के तत्त्वों एवं संसर्ग में आनेवाली विदेशी भाषाओं के शब्दों के समावेशन के साथ अद्य–पर्यन्त जारी है और हिन्दी अपनी अर्थवत्ता के व्यापकता के साथ अग्रसर हो रही है, लेकिन इस वृक्ष का मूल अभी भी संस्कृत के जमीन पर ही खड़ा है तथा इसका मूल पोषण संस्कृत से ही हो रहा है।

संदर्भ :

1. डॉ0 भोलानाथ तिवारी – भाषाविज्ञान – पृ0 207
2. डॉ0 नामवर सिंह– हिन्दी भाषा
3. डॉ0 भोलानाथ तिवारी– हिन्दी भाषा द्वि0 सं0 –पृ0–134
4. व्ही0 पृ0 –135
5. वही– पृ0 135
6. जॉर्ज ए0 ग्रियर्सन– लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया
7. डॉ0 रामविलास शर्मा – भा0 प्रा0 भा0 प0 हि0, 1 ⁄ 239